chapter-5

अध्याय-5

आधुनिक काल : अनुवाद के झरोखे से

5.1 भारतेन्दुकाल और अनुवाद

- 5.1.1 नाटक और अनुवाद
- 5.1.2 उपन्यास और अनुवाद
- 5.1.3 कहानी और अनुवाद

5.2 द्विवेदीकाल और अनुवाद

- 5.2.1 नाटक और अनुवाद
- 5.2.2 उपन्यास और अनुवाद
- 5.2.3 कहानी और अनुवाद

अध्याय-5

आधुनिक काल : अनुवाद के झरोखे से

5.1 आधुनिक काल और अनुवाद :

किसी भी साहित्य के इतिहास में काल-निर्धारण सबसे जटिल कार्य होता है । दो कालों के बीच का अंतराल स्पष्ट रूप से दिखाई दे इससे पहले ही काल-परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी होती है अतः काल निर्धारण सदैव लचीला होता है । हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल सन् 1857 से माना जाता है ।[1] उन्नीसवीं सदी के मध्य में आधुनिक जीवन-बोध के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ था इसलिए इतिहासकारों ने सन् 1850 को ही आधुनिक हिन्दी-साहित्य के आरंभ का वर्ष मान लिया ।

सन् 1757 में प्लासी के युद्ध में नवाब सिराजुद्दोला की हार और ईस्ट इंडिया कंपनी की जीत के बाद से ही भारत के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी । सम्पूर्ण बंगाल पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया । मुगल सम्राट शाहआलम को भी परास्त करके अंग्रेजों ने बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि की दीवानी अपने कब्जे में कर ली । सन् 1803 तक मराठों की संघशक्ति को समाप्त कर सन् 1849 में सिक्खों को भी पराजित करके सारे देश पर अंग्रेजों ने अधिकार जमा लिया । अंग्रेजों ने अपनी आर्थिक, शैक्षिक और प्रशासनिक नीतियों में परिवर्तन किया इससे भारत की प्रजा भी नए सन्दर्भ में कुछ नया सोचने और करने के लिए बाध्य हुई । इस समय मनुष्य के बृहत्तर सुख-दुःख के साथ साहित्य पहली बार जुड़ा । यह प्रक्रिया भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय गद्य के माध्यम से शुरू हुई ।[2] अतः इस काल के प्रारंभिक काल को भारतेन्दु युग का नाम दिया गया । इस काल की क्रमिक गतिविधियों को एक सूत्र में बाँधकर डॉ. नगेन्द्र ने इस काल को चार विभिन्न भागों में बाँटा है[3] -

1. पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल)	1857-1900 ई.
2. जागरण सुधारकाल (द्विवेदी काल)	1900-1918 ई.
3. छायावादकाल	1918-1938 ई.
4. छायावादोत्तर काल	

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.429
2. वही, पृ.458
3. वही, पृ.429

(क) प्रगति-प्रयोग काल 1938-1953 ई.

(ख) नवलेखन काल 1953 ई. से.....

अंग्रेजी शासन की स्थापना हो जाने के कारण भारत देश की अर्थ-नीति, शिक्षा पद्धति आदि में मूलभूत परिवर्तन होने से समाज का आधुनिकीकरण शुरु हुआ जो पुराने धार्मिक संस्कारों, रीति-रिवाजों आदि के साथ सुसंगत नहीं था । पुराने संस्कारों और नई वास्तविकता के बीच सामन्जस्य की आवश्कता हुई । अत: नए समाज के निर्माण की प्रक्रिया शुरु हुई । इस दिशा में सबसे पहला कदम राजा राममोहन राय ने उठाया । उन्होंने सन् 1828 में ब्रह्म समाज की रचना की । अरबी और फ़ारसी भाषाओं का उन्हें बहुत गहरा ज्ञान था । अरबी-अनुवाद के माध्यम से ही वे अफ़लातून, अरस्तू, प्लॉटिनस आदि प्राचीन यूनानी तत्त्वचिंतकों से परिचित हुए । बनारस जाकर उन्होंने कई वर्षों तक गीता, उपनिषद् आदि का भी गहरा अध्ययन किया । अंधश्रद्धा और कुरीतियों के सामने अकेले ही लड़े । जाति प्रथा को दूर करने तथा विधवा-विवाह, स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों का समर्थन किया। ब्रह्म समाज के बाद प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज, थियोसोफ़िकल सोसाइटी आदि की रचनाएँ कालसंदर्भ में अलग-अलग विचारकों ने की जिससे भारत अपने आधुनिक रूप में ढलने लगा ।

इस काल में रचित साहित्य का संदर्भ देखें तो रीतिकालीन साहित्य की तुलना में आधुनिक काल में हिन्दी-साहित्य ने बड़ी तेजी से विकास किया। हिन्दी साहित्य के इस तेज विकास को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । इस विकास का मूलाधार विभिन्न भाषाओं से किया गया अनुवाद है । इस काल में प्रचुर मात्रा में अनुवाद कार्य हुआ । इसी कारण हिन्दी साहित्य अपनी चरम सीमा की समृद्धि प्राप्त कर चुका है । इस काल के उपविभागों के माध्यम से अनुवाद कार्य को क्रमिक रूप से स्थापित किया जा सकता है ।

5.1.1 पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु काल) और अनुवाद :

विविध मतमतान्तरों के बाद 1857 से 1900 ई. तक का काल पुनर्जागरण काल माना गया है । सितम्बर, 1850 को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ था अतएव इस काल को भारतेन्दु काल के नाम से भी जाना जाता है । यह युग अंग्रेजी-शासन के वैभव का युग था । अनेक कठिनाइयों को सहन करने के बाद भारत की प्रजा अंग्रेजी शासन को वरदान समझने लगी

थी । साहित्यिक क्षेत्र में हिन्दी गद्य की शुरूआत तो हो गई थी परन्तु नए विचार, नई दिशा इसे नहीं मिल पाई थी । सुख सागर, ब्रजविलास जैसे प्राचीन पौराणिक ग्रंथों का अनुवाद मात्र हुआ था । इस युग में परंपरागत धार्मिकता और भक्ति भावना को अपेक्षाकृत गौण स्थान प्राप्त हुआ, फिर भी इस काल में वाल्मीकि रामायण से भाव लेकर हरिनाथ पाठक की 'श्री ललित रामायण', अक्षयकुमार द्वारा प्रणीत 'रसिकविलास रामायण', बाबू तोताराम की 'राम रामायण' आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं । इनके अलावा घनारंग दूबे की 'कृष्ण रामायण' में 'रामचरितमानस' का ही अनुकरण दिखाई देता है । इस काल के कवियों ने रीतिकालीन कवियों का अनुकरण करते हुए अपनी रचनाओं में श्रृंगारिकता भी भरी है । भारतेन्दु काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अलावा ठाकुर जगन्मोहनसिंह, बाबू तोताराम, लाला सीताराम, श्रीधर पाठक, अम्बिकादत्त व्यास आदि ने भरपूर अनुवाद किया है ।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार "मौलिक काव्यरचना के साथ ही भारतेन्दु युग के कुछ कवियों का ध्यान संस्कृत और अंग्रेजी से काव्यानुवाद की ओर भी गया ।"[1] कविता के अनुवाद की दिशा में राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा अनूदित 'रघुवंश' और 'मेघदूत' उल्लेखनीय कृतियाँ हैं । इन रचनाओं में शैलीगत लालित्य, सवैया छन्द, भावों के अंतरण की सहजता और शुद्ध सरल ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग किया गया है । 'नारद-भक्ति सूत्र' को 'तदीय सर्वस्व' और शांडिल्य के 'भक्तिसूत्र' को 'भक्तिसूत्र वैजयन्ती' शीर्षक देकर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अनुवाद किया । वाल्मीकि रामायण का 'राम रामायण' शीर्षक देकर बाबू तोताराम ने काव्यानुवाद किया है । ठाकुर जगन्मोहनसिंह द्वारा अनूदित 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' इस युग की विशिष्ट कृतियाँ हैं ।[2] जगन्मोहन मिश्र द्वारा अनूदित 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' में शब्दानूवाद के स्थान पर भाव-सौंदर्य के संरक्षण पर बल रहा है और कहीं-कहीं भावसंक्षेपण तथा भाव-विस्तार की पद्धतियाँ भी अपनाई गई हैं । कवित्त सवैयों, भाषा लालित्य और तत्सम पदावली की मनोहारी छटा इन कृतियों की विशेषताएँ हैं। परन्तु यही बात लाला सीताराम 'भूप' द्वारा अनूदित 'मेघदूत' और 'कुमार संभव', 'रघुवंश' और 'ऋतुसंहार' के विषय में नहीं कही जा सकती । अंग्रेजी

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.458
2. हिन्दी साहित्य : अनुवाद के झरोखे से, अशोक वर्मा का अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध, पृ.32

की ललित काव्य कृतियों के रूपान्तरण की ओर ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय श्रीधर पाठक को है । गोल्डस्मिथ कृत 'हरमिट' और 'डेज़र्टेड विलेज' को उन्होंने 'एकान्तवासी योगी' तथा 'ऊजड़ ग्राम' के रूप में अनूदित किया है ।[1]

इस युग के रचनाकारों की यह सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने प्राचीन और नवीन का कुशलतापूर्वक समन्वय किया । साथ ही कविताओं के अलावा नाटकों, कहानियों के भी इन्होंने अपनी भाषा में अनुवाद किए ।

5.1.1.1 भारतेन्दुकालीन नाटक और अनुवाद :

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल से ही हिन्दी में नाटक लिखने की शुरूआत हुई । इस युग के सर्वोत्कृष्ट नाटककार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र माने जाते हैं ।[2] इस काल में रचित नाटकों को प्रवृत्ति-भेद और विषय के आधार पर ऐतिहासिक, रोमानी, पौराणिक, सामयिक उपादानों के आधार पर रचित, प्रहसन, प्रतीकवादी आदि वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

भारतेन्दु काल में नाटकों की रचना का मूल हेतु मनोरंजन के साथ ही साथ लोकमानस को जागृत करना और उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न करना था । अतः इसमें सत्य, न्याय, त्याग, उदारता आदि जैसे मानव-मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने, प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम जगाने, अनुकरणीय पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों के प्रति समाज को आकृष्ट करने तथा नवीनता की आँधी से समाज को सुरक्षित रखते हुए उसका सुधार एवं परिष्कार करने पर अधिक बल दिया गया है । शास्त्रीय दृष्टि से भारतेन्दु युगीन नाटक संस्कृत नाट्यशास्त्र की मर्यादा की रक्षा करते हुए, युग और परिस्थिति के अनुसार उसमें यत्किंचित छूट लेकर अनूदित ही हुए हैं । साथ ही पाश्चात्य नाटकों से भी इस काल में रचित नाटक प्रभावित हुए हैं । पाश्चात्य ट्रेजेडी की पद्धति पर दुखान्त नाटक लिखने की परंपरा स्वयं भारतेन्दु ने ही शुरु की ।[3]

भारतेन्दु युग में लिखे गए नाटकों में अधिकांश नाटक अनुवाद के माध्यम से ही आए हैं । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्वयं कुल सत्रह नाटकों की रचना की जिनमें से सात नाटक तो अनूदित ही हैं । अनुवादों से न केवल नाटक साहित्य को नवीन दृष्टि प्राप्त हुई, वरन् हिन्दी-साहित्यकारों के रचना

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.459
2. वही, पृ.569
3. वही, पृ.471

संस्कार को एक विस्तृत आयाम भी मिला । संस्कृत भाषा से भवभूति और कालिदास के नाटकों के अनुवाद अधिक हुए । सन् 1862 में 'अभिज्ञान शाकुन्तल' का हिन्दी में अनुवाद करके राजा लक्ष्मणसिंह ने हिन्दी-प्रेमियों का ध्यान आकृष्ट किया था । इसके अलावा डॉ. नगेन्द्र ने अनूदित नाटकों की एक लम्बी सूचि तैयार की है, यथा -

भवभूति कृत 'उत्तररामचरित' का 1871 में देवदत्त तिवारी ने, 1886 में नन्दलाल विश्वनाथ दूबे ने, 1897 में लाला सीताराम ने, 'मालती-माधव' का 1881 में लाला शालिग्राम ने, 1898 में लाला सीताराम ने, 'महावीर चरित' का 1897 में लाला सीताराम ने अनुवाद किया ।

कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतल' का 1888 में नन्दलाल विश्वनाथ दूबे ने तथा 'मालविकाग्निमित्र' नाटक का 1898 में लाला सीताराम ने अनुवाद किया था ।

कृष्णमित्र के 'प्रबोधचन्द्रोदय' का 1879 में शीतलाप्रसाद ने, 1885 में अयोध्याप्रसाद चौधरी ने अनुवाद किया था ।शूद्रक के 'मृच्छकटिक' का 1880 में गदाधर भट्ट ने, 1899 में लाला सीताराम ने अनुवाद किया था ।

हर्ष कृत 'रत्नावली' का 1872 में देवदत्त तिवारी ने, 1898 में बालमुकुन्द सिंह ने अनुवाद किया था ।

भट्ट नारायण कृत नाटक 'वेणीसंहार' का अनुवाद 1897 में ज्वालाप्रसाद सिंह ने किया था ।[1]

संस्कृत नाटकों के अनुवाद के अलावा बंगला भाषा से भी अधिकाधिक अनुवाद हुए । माइकेल मधुसूदन के बंगला नाटकों का सर्वाधिक अनुवाद हुआ है । डॉ. नगेन्द्र के अनुसार माइकेल मधुसूदन कृत 'पद्मावती' नाटक का 1878 में बालकृष्ण भट्ट ने; 'शर्मिष्ठा' नाटक का 1880 में रामचन्द्र शुक्ल ने; 'कृष्णमुरारी' नाटक का 1899 में रामकृष्ण वर्मा ने अनुवाद किया । मनमोहन वसु कृत 'सती' का 1880 में उदितनारायण लाल ने; राजकिशोर के कृत 'पद्मावती' का 1889 में रामकृष्ण वर्मा ने, द्वारिकानाथ गांगुली कृत 'वीरनारी' का 1899 में रामकृष्ण वर्मा ने अनुवाद किया ।[2]

अंग्रेजी से सबसे अधिक अनुवाद शेक्सपियर के नाटकों के हुए । पारसी कंपनियाँ भारत में शेक्सपियर के नाटकों का उर्दू में अनुवाद करके

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.471
2. वही, पृ.472

उनका अभिनय प्रस्तुत करती थीं इस कारण इन नाटकों को खूब प्रसिद्धि मिली । डॉ. नगेन्द्र के अनुसार शेक्सपियर के प्रमुख अनूदित नाटक - (1) मरचेन्ट ऑफ वेनिस (वेनिस का व्यापारीआर्या, 1888), (2) दि कॉमेडी ऑफ एरर्स (भ्रमजालक - मुंशी इमदाद अली, भूलभुलैया - लाला सीताराम (1885)), (3) एज़ यू लाइक इट (मनभावन - पुरोहित गोपीनाथ, 1896), (5) मैकबेथ (साहसेन्द्र साहस - मथुराप्रसाद उपाध्याय, 1893) । शेक्सपियर के इन नाटकों के अनुवादों के अतिरिक्त बाबू तोत्ताराम ने जोज़ेफ़ एडीसन के नाटक 'केटो' का अनुवाद 'कृतान्त' (1879) शीर्षक से किया ।[1]

इन अनुवादों से हिन्दी नाटकों को नई दिशा मिली । भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी आदि के नाटकों का हिन्दी में अनुवाद तो किया ही साथ-साथ इन नाटकों की शैली आदि का उपयोग करके मौलिक नाटक लिखने की परंपरा के भी बीज बोए । इस प्रकार रहस्यवादी, दुखान्त आदि नाटक लिखने की परंपरा भी हिन्दी में शुरू हो गई ।

5.1.1.2 भारतेन्दुकालीन उपन्यास और अनुवाद :

भारतेन्दुकालीन उपन्यासों पर परवर्ती नाटक-साहित्य और संस्कृत के कथा-साहित्य का भारी प्रभाव रहा था । हिन्दी में साहित्यकारों को उपन्यास की रचना की प्रेरणा अंग्रेजी और बंगला भाषा के उपन्यासों से मिली । 'परीक्षागुरु' नामक उपन्यास अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है जिसकी रचना 1882 ई. में लाला श्रीनिवासदास ने की थी ।[2] हिन्दी भाषा में मौलिक उपन्यासों की रचना का प्रारंभ होने से पहले बंगला भाषा के उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद लोकप्रिय हो चुके थे । इस काल के प्रमुख उपन्यासकारों में लाला श्रीनिवासदास, किशोरीलाल गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट, ठाकुर जगन्मोहनसिंह, राधाकृष्णदास, लज्जाराम शर्मा, देवकीनन्दन खत्री, गोपालराम गहमरी आदि उल्लेखनीय हैं ।

भारतेन्दुकाल में बंगला और अंग्रेजी भाषा से उपन्यासों के अनुवाद की ओर साहित्यकारों ने ध्यान दिया । उपन्यास के संदर्भ में सबसे अधिक अनुवाद बंगला भाषा से किए गए । बंगला साहित्य में बंकिमचन्द्र चटर्जी, रमेशचन्द्र दत्त, तारकनाथ गांगुली और दामोदर मुकर्जी के उपन्यास बहुत ही लोकप्रिय हुए थे । इसलिए हिन्दी भाषा में भी प्रायः इन्हीं उपन्यासकारों के उपन्यास

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.472
2. वही

अनूदित हुए । डॉ. नगेन्द्र ने कुछ प्रमुख अनूदित उपन्यासों की एक सूची तैयार की है जो इस प्रकार है : रमेशचन्द्र दत्त कृत 'बंग विजेता' का 1886 में गदाधर सिंह ने, बंकिमचन्द्र के 'दुर्गेशनंदिनी' का 1882 में गदाधर सिंह, राजसिंह, इन्दिरा, राधारानी ने तथा युगलांगुरीय का प्रतापनारायण मिश्र ने अनुवाद किया । दामोदर मुकर्जी कृत 'मृण्मयी' का राधाचरण गोस्वामी ने अनुवाद किया । स्वर्णकुमारी कृत 'दीप निर्वाण' का हरितनारायण लाल ने अनुवाद किया । इनके अलावा रामकृष्ण वर्मा ने 'चित्तौर चातकी' (1895), कार्तिकप्रसाद खत्री ने 'इला' (1895), 'प्रमीला' (1896), 'जया', 'मधुमालती का, गोपालराम गहमरी ने 'चतुर चंचला' (1893), 'भानमती' (1894) और 'नये बाबू' शीर्षक अनूदित उपन्यासों की रचना की । पुरोहित गोपीनाथ ने 'वीरेन्द्र' (1896) शीर्षक से किसी अंग्रेजी उपन्यास का छायानुवाद किया, जबकि गोपालराम गहमरी ने किसी विलायती कहानी का निचोड़ लेकर 'गुप्तचर' (1899) नामक उपन्यास लिखा । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने मराठी भाषा से 'पूर्ण प्रकाश चन्द्रप्रभा' नामक उपन्यास का अनुवाद किया था । उर्दू से अनूदित उपन्यासों में रामकृष्ण वर्मा कृत 'संसार दर्पण' (1885), 'अमला वृतान्तमाला' (1884), 'ठग वृत्तान्तमाला' (1889) और 'पुलिस वृतान्तमाला' (1890) उल्लेखनीय हैं ।[1]

इस प्रकार हिन्दी में नाटकों के बाद उपन्यासों के अनुवाद की एक परंपरा ही शुरु हो गई । वास्तव में नाटक और उपन्यास विधाओं में बंगला साहित्य श्रेष्ठ था ऐसा तत्कालीन हिन्दी साहित्यकार मानते थे तथा हिन्दी साहित्य के विकास के लिए बंगला-साहित्य, अंग्रेजी-साहित्य, उर्दू-साहित्य आदि का सहारा लेना भी अत्यावश्यक समझते थे । फलस्वरूप हिन्दी साहित्य को अनुवाद के माध्यम से समृद्ध उपन्यास तो मिले ही साथ ही हिन्दी उपन्यास विधा को नई दिशाएँ भी मिलीं ।

5.1.1.3 भारतेन्दुकालीन कहानी और अनुवाद :

भारतेन्दुकाल में आधुनिक कलात्मक कहानी लिखने की शुरूआत नहीं हुई थी । परन्तु कहानी-संग्रह ही प्रकाशित हुए थे । मुंशी नवलकिशोर द्वारा संपादित 'मनोहर कहानी' (1880) में संकलित एक सौ कहानियाँ, अम्बिकादत्त व्यास कृत 'कथा कुसुम कलिका' (1888) और चंडीप्रसाद सिंह कृत 'हास्य

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.474

रतन' (1886) आदि संग्रहों को तत्कालीन लेखकों ने स्वयं लिखकर या किसी से लिखवाकर सम्पादन करके प्रकाशित करवा दिया । जिन स्वप्न-कथाओं का उल्लेख कहानी के रूप में किया जाता है वे तो मूलत: कथात्मक निबंध ही हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और बालकृष्ण भट्ट की स्वप्न-कथाएँ कहानी और निबन्ध के बीच की रचनाएँ हैं । कहानियों के अभाव में तत्कालीन पाठक वर्ग लघु उपन्यासों, मध्यकालीन प्रेमकथाओं के गद्यात्मक रूपान्तरों, बैताल पच्चीसी, 'सिंहासन बत्तीसी' आदि की कहानियों, रसात्मक लोककथाओं आदि से अपना मन बहला लिया करता था । आचार्य रामचन्द्र के कथन का उल्लेख करते हुए डॉ. नगेन्द्र का कहना है कि अंग्रेजी मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित आख्यायिकाओं या कहानियों की तरह ही कहानियों की रचना 'गल्प' के नाम से बंगला भाषा में चल पड़ी थी । ये कहानियाँ जीवन के मार्मिक और भावव्यंजक चित्रों के रूप में होती थीं । द्वितीय उत्थान की सारी प्रवृत्तियों का आभास लेकर प्रकाशित होनेवाली पत्रिका 'सरस्वती' में इस प्रकार की छोटी कहानियाँ प्रकाशित होने लगीं । अत: 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के पूर्व आधुनिक कलात्मक हिन्दी-कहानियों का अस्तित्व ही नहीं था ।[1]

इस प्रकार भारतेन्दुकाल में हिन्दी भाषा में कहानियों के नाम पर कहानी संग्रह या कथा से ही कहानी विधा की रिक्ति-पूर्ति हो जाती थी । अत: कहानी के आज के रूप का अस्तित्व न होने से अनुवाद होने की संभावना ही नहीं रह जाती ।

5.1.1.4 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक अनुवादक :

सुधारवादी काव्य के प्रणेता कविवर हरिश्चन्द्र (1850-1885) का जन्म काशी में इतिहास प्रसिद्ध सेठ अमीचन्द के धनाढ्य वैश्य वंश में हुआ था । इनके पिताजी बाबू गोपालचन्द्र 'गिरिधरदास' भी अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे । हरिश्चन्द्र की शिक्षा घर पर ही हुई थी । ग्यारह वर्ष की आयु में ही इन्होंने काव्य रचना प्रारंभ कर दी थी और अल्पायु में कवित्त्व-प्रतिभा और सर्वतोमुखी रचना-क्षमता का ऐसा परिचय दिया था कि उस समय के पत्रकारों तथा साहित्यकारों ने 1880 ई. में उन्हें 'भारतेन्दु' की उपाधि से सम्मानित किया था । कवि होने के साथ-साथ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पत्रकार भी थे - 'कविवचनसुधा' और 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' उनके सम्पादन में प्रकाशित होनेवाली

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.475

प्रसिद्ध पत्रिकाएँ थीं । नाटक, निबंध आदि की रचना द्वारा उन्होंने खड़ी बोली की गद्य शैली के निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भोगदान दिया था ।[1]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी भाषा की सभी विधाओं पर अपनी सशक्त कलम चलाई है जिससे हिन्दी भाषा तथा हिन्दी साहित्य को जीवन मिला । उन्होंने अपने जीवन के अल्पकाल में कवि, नाटककार, निबंध लेखक, उपन्यासकार, पुरातत्वेता, इतिहासकार तथा पत्रकार के रूप में साहित्य की विविध विधाओं और प्रकारों के साथ-साथ जितने परिमाण में साहित्य की रचना की उतनी हिन्दी के शायद ही किसी साहित्यकार ने की होगी । भारतेन्दु स्वयं का कहना था कि "हिन्दी भाषा में जो सब भाँति की पुस्तकें बनने योग्य हैं अभी बहुत कम बनी हैं, विशेषकर नाटक तो कोई भी ऐसे नहीं बने हैं जिनकों पढ़कर चित्त को कुछ आनन्द और इस भाषा का बल प्रकट हो । इस वास्ते मेरी ऐसी इच्छा है कि दो चार नाटकों का तर्जुमा हिन्दी में हो जाए तो मेरा मनोरथ सिद्ध हो ।"[2] चूँकि वे संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा भारतीय अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे इसलिए साहित्य-सृजन के साथ-साथ उन्होंने अनुवाद के माध्यम से भी हिन्दी की श्रीवृद्धि की ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कुल मिलाकर सत्रह नाटकों की रचना की है । इनमें उनके सात अनूदित नाटक हैं । इन अनूदित नाटकों में पाँच नाटकों का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद किया है - हर्ष कृत 'रत्नावली' (1868 ई.), कृष्ण मिश्र का 'पाखंड विडंबन' (1872 ई.), कांचन के 'धनंजय विजय' (1873), कांचन के ही संस्कृत नाटक सट्टक का 'कर्पूर मंजरी' (1875), विशाखादत्त के संस्कृत नाटक का 'मुद्राराक्षस', संस्कृत 'चौरपंचाशिका' के बंगला-संस्करण का हिन्दी अनुवाद 'विद्यासुन्दर', शेक्सपियर के अंग्रेजी नाटक 'मचचेन्ट ऑफ़ वेनिस' का अनुवाद 'दुर्लभबन्धु' नाम से किया ।[3]

नाटकों के अलावा भारतेन्दु ने अनेक कविताओं का भी अनुवाद किया है । उन्होंने 'नारद भक्तिसूत्र' और शांडिल्य के भक्तिसूत्र को 'तदीय सर्वस्व' और 'भक्तिसूत्र वैजयंती' शीर्षकों से अनूदित किया है । इसके अलावा मराठी भाषा के 'पूर्ण प्रकाश चन्द्रप्रभा' नामक उपन्यास का भी भारतेन्दु ने

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.462
2. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी का लेख 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पृ.159
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. रामनिवास गुप्त, पृ.456

हिन्दी में अनुवाद किया है । उनके अनुवाद की विशेषता रही है कि उन्होंने मूल कृति के पद्य का अनुवाद पद्य में और गद्य का गद्य में बड़ी सफलतापूर्वक किया है । हर्ष कृत 'रत्नावली' के अनुवाद में उन्होंने जहाँ छन्द हैं वहाँ छन्द ही रखे हैं । 'धनंजय विजय' नाटक एक छोटी-सी पद्य-गद्यमय रचना है जिसका कथानक महाभारत के विराटपर्व से लिया गया है । भारतेन्दु ने इसका उसी प्रकार पद्य-गद्य में ही अनुवाद किया है । उन्होंने कुछ नाटकों का अनुवाद करते समय एक नई शैली की सर्जना की है । 'मुद्राराक्षस' नाटक के प्रारंभ में 'पूर्वकथा' के रूप में चाणक्य और राक्षस की कथा पर विचार किया और अंत में नाटक की ऐतिहासिकता के संबंध में अनुसंधानपरक सामग्री दी है ।[1]

भारतेन्दु ने 'मुद्राराक्षस' नाटक में आवश्यकतानुसार यत्र-तत्र परिवर्तन किया है साथ ही इसकी मौलिकता का पूर्णतः ध्यान रखा है । उदाहरण के तौर पर -

मूल -

अलमति प्रसङ्गेन । आज्ञा पितोस्मि परिषदा यथाट्य त्वया
सामन्तवटेश्वरदत्त पौत्रस्य महाराजभास्करदत्त । सूनौ कवेर्वि -
शाखादत्तस्य कृतिरभिनव मुद्राराक्षस नाम नाटकं नाटयित व्यामिति ।

अनुवाद -

बस ! बहुत मत बढ़ाओ । सुनो आज मुझे सभासदों की आज्ञा है कि सामंत वटेश्वरदत्त के पौत्र और महाराजा पृथु के पुत्र विशाखादत्त कवि का बनाया हुआ मुद्राराक्षस नाटक खेलो । सच है, जो सभा काव्य के गुण और दोष को सब भाँति समझती है, उसके सामने खेलने में मेरा भी चित्त संतुष्ट होता है ।[2]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने आंचलित महत्त्व को बनाए रखने के लिए भारतीय बोलियों का भी प्रयोग किया है । उन्होंने यह प्रयोग पात्रों को वास्तविक रूप देने के लिए किया । यथा - "बंगला भाषा से अनूदित 'विधासुन्दर' नाटक में चौकीदार कहता है - ईके हो भाई, कोई परदेशी जान पड़ाला, हम हन के घूस-फूस देह नाहीं, भला देखी तो सही ।"[3]

---

1. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी का लेख 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पृ.161
2. वही
3. वही

P|Th
1458

अनुवाद को सुन्दर रूप देने के लिए भारतेन्दु ने मुहावरों आदि का भी खुलकर प्रयोग किया है -

"मुद्राराक्षस से मूल - स्वकर्मण्यधिकंतरमभियुक्तः परिजनः।

अनुवाद - क्योंकि घरवाले सभी अपने-अपने काम में चूर हो रहे हैं ।

मुद्राराक्षस से मूल - भवनमतिथियः संप्राप्ता यत एष पाठ विशेषमरम्भ ।

अनुवाद - आज अतिथि लोगों ने कृपा किया है कि ऐसे धूम से रसोई चढ़ रही है ।"[1]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कुछ नाटकों का अनुवाद करते समय कुछ परिवर्तन भी किया है । यथा -

"महाकवि राजशेखर के 'सट्टक कर्पूरमंजरी' (दूसरा अंक) के अनुवाद में भारतेन्दु ने कविवर पद्माकर का उल्लेख किया है जबकि मूल में ऐसा कोई उल्लेख नहीं है । इसके अलावा मूल रचना में कामदेव के पाँच बाण हैं जबकि अनुवाद में दो बाण और बढ़ा दिए हैं ।"[2]

हालाँकि कुछ विद्वानों ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुवादों में दोष भी निकाले हैं परन्तु भारतेन्दुकाल में हिन्दी अपनी शिशु अवस्था में थी अतः उन तथाकथित दोषों को दोष न मानकर मूलभूत सोपान मानना ही अन्य कुछ विद्वानों ने उचित समझा है । संस्कृत के अलावा भारतेन्दु ने बंगला तथा अंग्रेजी भाषा के नाटकों के भी अनुवाद किए । संस्कृत, बंगला आदि भाषाएँ तो हिन्दी की अपनी संस्कृति की भाषाएँ हैं जबकि अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय संस्कृति ही बदल जाती है जिसका अन्तरण करना बड़ा ही कठिन सिद्ध होता है । अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वैनिस' का हिन्दी में अनुवाद भारतेन्दु ने बड़ी ही कुशलतापूर्वक किया है । यह अनुवाद मूलतः छायानुवाद है जिसमें मूल के सामाजिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ को यथासंभव भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में अनुकूलित करने का प्रयत्न किया गया है । पात्रों के नाम तथा स्थानों आदि के नाम भी भारतीय संदर्भ में रखे हैं जैसे -

"Antonio - अनंत, Bassanio - बसन्त, Greatiano - गिरिश,

1. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी का लेख 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पृ.162
2. वही

Salerio - सरल, Solanio - सलोने, Lorenzo - लवंग, Shylock - शैलाक्ष, Turbal - दुर्बल, Portia - पुरश्री, Nerissa - नरश्री, Jessica - जशोदा, Venice - वंशपुर, Merroco - मोरकुटी, Belmont - बिल्वमठ, Arragon - आर्यग्राम, Genoa - जयपुर आदि ।"[1]

इसके अलावा ईसाई संत 'डेनियल' को 'महात्मा विक्रम', अंग्रेजी संगीतकार 'डियाना' को 'तानसेन', 'हर्क्युलिस' और 'फ्राउनिंग मैन' जैसे वीरपुरूषों को 'मानसिंह' और 'विजयसिंह' आदि नाम देकर भारतेन्दु ने नाटक को भारतीय रूप देने की सफल चेष्टा की है । अनुवाद को जीवन्तरूप देने के लिए भारतेन्दु ने शब्दानुवाद के साथ-साथ आंचलिक पुट भी दिया और कहीं-कहीं मुहावरों आदि का भी प्रयोग किया है । प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी के अनुसार कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

मूल - Shylock - My flesh and blood to rebel.

अनुवाद - मेरा ही माँस और रुधिर मुझसे विरूद्ध हो ।

मूल - The Jew shall have my flesh, blood, bones and all.

अनुवाद - मैं अपना माँस, त्वचा, अस्थि और जान प्राण वो धन उस जैन के अर्पण करूँगा ।

मूल - That take some palms in writing.

अनुवाद - लिखाई की संती लेती है ।[2]

इस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने विभिन्न भाषाओं से अनुवाद करके हिन्दी साहित्य को अनेक भाषाकीय नए संस्कारों से सींचा । उन्होंने मूल रचना के भीतर प्रवेश करके अर्थ को समझा और हिन्दी भाषा की भाषिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अनुकूल रूपान्तर किया । हालाँकि अनेक विद्वानों ने इन अनुवादों में कई दोष भी बताए हैं, फिर भी उन्हीं विद्वानों ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हिन्दी गद्य का जन्मदाता, प्रथम सशक्त पत्रकार, हिन्दी निबंध परंपरा का जनक और प्रथम समर्थ नाटककार तथा प्रथम अनुवादक मानने से इंकार नहीं किया । साथ ही भारतेन्दुकालीन हिन्दी साहित्य अनुवाद के माध्यम से बड़ी तेजी से अपने विकास की ओर अग्रसर

1. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी का लेख 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पृ.162
2. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी का लेख 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' पृ.164-165

होने लगा । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सहित राजा लक्ष्मण सिंह, बाबू तोताराम, जगन्मोहन मिश्र, लाला सीताराम 'भूप', श्रीधर पाठक, लाला शालिग्राम, नन्दलाल विश्वनाथ दूबे, शीतलाप्रसाद, अयोध्याप्रसाद चौधरी, रामचन्द्र शुक्ल आदि जैसे बड़े-बड़े ख्यातिनाम साहित्यकारों ने संस्कृत, बंगला, प्राकृत, अंग्रेजी आदि भाषा के अनेक ग्रंथों, रचनाओं आदि का हिन्दी में अनुवाद किया जिससे हिन्दी भाषा को तो अनेक नये आयाम मिले ही परन्तु मानव समाज में भी पुनर्जागृति आई और युगनाम सार्थक हुआ ।

5.2 द्विवेदी काल और अनुवाद :

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के 1900 ई. से 1918 ई. तक के इस कालखंड के प्रणेता, विचारक, सर्वस्वीकृत साहित्य - नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम 'द्विवेदी-युग' रखा गया है । इस कालखंड को 'जागरण-सुधार-काल' के नाम से भी जाना जाता है । अंग्रेजों की सत्ता के दमन चक्र और कूटनीति का यह काल था । सन 1857 के विद्रोह के बाद महारानी विक्टोरिया के 1858 में सहृदयपूर्ण घोषणा-पत्र से भारत की प्रजा को कुछ नई आशा दिखाई दी । परन्तु छोटे-मोटे कुछ सुधारों के अलावा अधिक कुछ नहीं हुआ । फिर से काले कानून आए और बेचारी जनता गरीबी में पिसने लगी । अंग्रेजों की आर्थिक नीति से देश निरंतर गरीब निर्धन होने लगा । उस पर एक के बाद एक पड़नेवाली दर्भिक्षों ने तो भारत की प्रजा की कमर ही तोड़ डाली । जनता जागृत हुई और अपनी स्वतंत्रता की माँग अंग्रेजों से की । बालगंगाधर तिलक और गोपालकृष्ण गोखले जैसे मेघवी नेताओं ने अंग्रेजों के विरूद्ध बुलंद आवाज उठाई । साथ ही भारतेन्दुकालीन साहित्यकार जहाँ भारत-दुर्दशा पर दुख प्रकट करके रह गया था वहाँ द्विवेदीकालीन साहित्यकारों ने देश की दुर्दशा के चित्रण के साथ-साथ देश की जनता को स्वतंत्रता की प्रेरणा भी दी और देशप्रेम का मार्ग दिखाया । आत्मोत्सर्ग और बलिदान का मार्ग भी दिखाया ।[1]

इस काल से पूर्व साहित्य के क्षेत्र में मुख्यतः श्रृंगार-काव्य, भक्ति-काव्य आदि की धाराएँ प्रवाहित थीं । गद्य की भाषा केवल खड़ी बोली का स्वीकार करने के बावजूद काव्य में भी इस खड़ी बोली का प्रयोग शुरू नहीं हो पाया था । हालाँकि खड़ी बोली में भी कुछ रचनाएँ हुईं परन्तु उन्हें

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.487

काव्योपयुक्त नहीं माना गया । उन्नीसवीं सदी का अन्त होते-होते हवा बदलने लगी । परिवर्तित जन-रूचि को भक्ति एवं शृंगार का पिष्टपेषण बेस्वाद प्रतीत होने लगा । समस्यापूर्तियों एवं नीरस तुकबन्दियों से साहित्यरसिक ऊब गए थे। ठीक इसी समय साहित्यरसिकों की रूचि एवं आकांक्षाओं के पारखी तथा साहित्य के दिशा-निदेशक आचार्य के रूप में पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी का आगमन हुआ । उन्होंने जून 1900 की 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित 'हे कवित्ते' कविता में ब्रजभाषा के चिरप्रयोग पर क्षोभ प्रदर्शित किया तथा जनरूचि का प्रतिनिधित्व करते हुए सौरस्य एवं वैविध्य के अभाव तथा कमी पर क्षोभ व्यक्त किया था । 1903 में आचार्य द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक बने । उन्होंने विविध विषयों पर कविता लिखने, सभी प्रकार के छन्दों का व्यवहार करने, सभी काव्यरूपों को अपनाने तथा गद्य और पद्य भाषा के एकीकरण का परामर्श दिया । अतः मैथिलीशरण गुप्त, गोपालशरण सिंह, गयाप्रसाद शुक्ल, लोचनप्रसाद पाण्डेय आदि अनेक कवि आचार्य द्विवेदी के आदर्शों को लेकर सामने आए । समयानुसार चलनेवाले साहित्यकारों ने अपना रास्ता बदला । अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', नाथूराम शर्मा 'शंकर' आदि प्रचलित उपादानों को छोड़कर नए विषयों पर साहित्य लिखने लगे । इस युग के साहित्य में विषय की दृष्टि से अपार वैविध्य एवं नवीनता आई ।[1]

द्विवेदी युग में अनुवाद कार्य विशेष रूप से रहा है । बड़े-बड़े साहित्यकारों ने देशभक्ति में लीन होने तथा परंपरा से चली आ रही रूढ़ियों से बाहर निकलने के लिए भारतीय प्रजा को जागृत करने, साहित्यकारों की नई पीढ़ी का निर्माण करने, हिन्दी भाषा और साहित्य का उत्थान करने के लिए अनुवाद को सशक्त माध्यम माना और अनुवाद किए । श्रीधर पाठक ने कालिदास कृत 'ऋतुसंहार' और गोल्डस्मिथ कृत 'हरमिट', 'डेज़र्टेड विलेज' तथा 'दि ट्रेवलर' का बहुत पहले ही क्रमशः 'ऋतुसंहार', 'एकान्तवासी योगी', 'ऊजड़ ग्राम' और 'श्रान्त पथिक' शीर्षक से काव्यानुवाद किया था ।[2] पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी के मौलिक और गद्य-पद्य ग्रंथों की संख्या लगभग 80 है। मौलिक काव्य रचना की ओर इनकी विशेष प्रवृत्ति नहीं थी, अनूदित काव्य कृतियाँ अधिक सरस हैं ।[3] राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' ने कालिदास के

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.488
2. वही, पृ.496
3. वही, पृ.497

'मेघदूत' का 'धाराधरधावन' शीर्षक से अनुवाद किया ।[1] मैथिलीशरण गुप्त ने 'प्लासी का युद्ध', 'मेघनाद-वध', 'वृत्तसंहार' आदि का अनुवाद किया ।[2] बालमुकुन्द गुप्त अच्छे कवि, अनुवादक और अपने समय के बहुत कुशल सम्पादक थे ।[3] गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत के भी कवि थे । उन्होंने संस्कृत और बंगला से हिन्दी में पद्यानुवाद भी किया है । रूपनारायण पाण्डेय ने भी संस्कृत तथा बंगला काव्यों के हिन्दी में सरस अनुवाद भी किए हैं ।[4] इनके अलावा श्री सदानंद अवस्थी, लाला सीताराम, कविरत्न सत्यनारायण, चतुर्भुज औदीच्य, लल्लीप्रसाद पाण्डेय, गंगाप्रसाद श्रीवास्तव, ब्रजनन्दन सहाय, गंगाप्रसाद गुप्त, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', दुर्गाप्रसाद खत्री, महावीरप्रसाद पोददार, लाला चन्द्रलाल, ईश्वरीप्रसाद शर्मा आदि ने भी संस्कृत तथा बंगाली भाषा से अनुवाद किए ।[5] अन्य अनुवादकों में गिरिजाकुमार घोष (पार्वतीनंदन) और बंगमहिला के नाम भी द्विवेदी युग में अनुवादकों के रूप में विशेष उल्लेखनीय हैं ।[6]

इस युग में सही अर्थ में खड़ी बोली अपना आकार ले रही थी - हिन्दी भाषा विकास की ओर आगे बढ़ रही थी । साहित्यकारों ने संस्कृत, प्राकृत, बंगला, उर्दू आदि भाषाओं के शब्दों को अपनाना शुरु कर दिया था । अनुवाद के माध्यम से हिन्दी भाषा में कहानी जैसी विधा का आरंभ होने से विभिन्न विचारों, संस्कृतियों से उदाहरण प्राप्त करके समाज अपने ढर्रे से परिवर्तन की ओर जागरण की ओर बहने लगा ।

5.2.1 द्विवेदीकालीन नाटक और अनुवाद :

द्विवेदी काल में सृजित साहित्य में भारी हलचलें पैदा करने में सांस्कृतिक चेतना का महत्त्वपूर्ण योगदान है । अंग्रेजों के शासन के प्रति प्रजा में उत्पन्न असंतोष की भावना में से राष्ट्रीय चेतना का उद्भव हुआ जिससे स्वतंत्रता प्राप्ति का संतोष पैदा हुआ । इस असंतोष से लेकर संतोष तक की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका को

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.497
2. वही, पृ.501
3. वही, पृ.502
4. वही, पृ.503
5. वही, पृ.513
6. वही, पृ.515

नकारा नहीं जा सकता । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि द्वारा इस काल में साहित्यकारों ने धार्मिक-सामाजिक क्षेत्र में उदारता और सहिष्णुता के साथ-साथ राजनीतिक जागरूकता, आर्थिक समझदारी और राष्ट्र-प्रेम आदि के प्रति भारतीय जनमानस आकृष्ट हो इस सुहेतु को लेकर विभिन्न साहित्य-विधा में अपने विचार प्रस्तुत किए ।

द्विवेदी काल में रचित नाटक संख्या की दृष्टि से कम नहीं है परन्तु नाट्य साहित्य की दृष्टि से यह काल सबसे कम समृद्ध है । इस काल में पौराणिक, ऐतिहासिक, सामयिक उपादानों पर रचित रोमांचकारी नाटक, प्रहसन आदि नाटक लिखे गए । इन नाटकों में राधाचरण गोस्वामी कृत 'श्रीदामा', बनवारीलाल कृत 'कंसवध' और 'कृष्णकथा', रामनारायण मिश्र कृत 'जनक बाड़ा', गंगाप्रसाद कृत 'रामाभिषेक', रामगुलामलाल कृत 'धनुषयज्ञलीला', महावीरसिंह का 'नलदमयन्ती', गौरचरण गोस्वामी कृत 'अभिमन्यु-वध', बांके बिहारीलाल कृत 'सावित्री नाटिका', हरिदास माणिक कृत 'पाण्डव प्रताप', गंगाप्रसाद गुप्त कृत 'वीरजयमल', वृन्दावनलाल कृत सेनापति उदाल, प्रतापनारायण मिश्र कृत 'भारत-दुर्दशा', मिश्रबन्धु कृत 'नेत्रोन्मीलन', मोहम्मद मियां कृत रोमांचकारी नाटक आदि प्रमुख हैं ।[1]

द्विवेदी काल में संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला भाषा से अनेक नाटकों के अनुवाद भी हुए । संस्कृत के 'मृच्छकटिक' का लालासीताराम ने, श्री सदानन्द अवस्थी ने नागानन्द, कविरत्न सत्यनारायण ने 'उत्तर रामचरित' का अनुवाद किया । अंग्रेजी से शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद लाला सीताराम और चतुर्भुज औदीच्य ने किया । फ्रांस के प्रसिद्ध नाटककार मोलियर के नाटकों को लल्लीप्रसाद पाण्डेय और गंगाप्रसाद श्रीवास्तव ने अंग्रेजी के माध्यम से अनूदित किया । बंगला भाषा से कुछ नाटकों का अनुवाद ब्रजनन्दन सहाय ने किया ।[2]

द्विवेदी युग के मैथिलीशरण गुप्त ने भी भास के 'प्रतिमा', 'अभिषेक' और 'अविभारकम्' का अनुवाद इन्हीं नामों से किया ।[3] नानक चन्द मनोत ने हैमलेट का, गणपति कृष्ण गुर्जर-जयन्त 'बलभद्र का राजकुमार', गोविन्द प्रसाद

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.510
2. वही, पृ.511
3. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित डॉ. सिम्मी शर्मा का लेख 'संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवादक' पृ.23

घिल्डियाल - 'ऑथेलो या वेनिस का मूर', महेशचन्द्र प्रसाद - Twelfth Night का 'डाह का फल' के नाम से अनुवाद किया ।[1] इसके अलावा लाला सीताराम ने शेक्सपियर के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण नाटकों का अनुवाद किया जिनमें से द्विवेदी युग में निम्नलिखित नाटकों का अनुवाद किया -

King Henry V	राजा हेनरी पंचम
King Lear	राजा लियर
Richard II	राजा रिचार्ड
Comedy of Errors	भूलभुलैया
As you like it	अपनी अपनी रुचि
Twelfth Night	जंगल में मंगल
Hamlet	डेनमार्क का राजकुमार (गद्यानुवाद)

इस प्रकार द्विवेदी काल में अनेक भाषाओं से अनेक नाटकों के अनुवाद हुए । जिससे स्रोतभाषा के विभिन्न मूल विचारों पर आधारित लिखे गए नाटक हिन्दी भाषा में आए । अतः हिन्दी साहित्य का नाट्यशास्त्र इस युग में अधिक तो नहीं परन्तु अल्प मात्रा में विकसित तो हुआ ही है ।

5.2.2 द्विवेदी कालीन उपन्यास और अनुवाद :

द्विवेदी काल का कथा-साहित्य अपेक्षाकृत अधिक समृद्ध है । इस काल में सामान्य जीवन की यथार्थ समस्याओं पर आधारित गंभीर उपन्यासों की रचना कम और कुतूहल, रहस्य और रोमांचकारी उपन्यासों की रचना अधिक हुई है । देवकीनन्दन खत्री ने भारतेन्दु काल में ही तिलस्मी-ऐयारी उपन्यासों की परंपरा का आरंभ कर दिया था । इस युग में भी उन्होंने 'काजर की कोठरी', 'अनूठी बेगम', 'गुप्त गोदना', 'भूतनाथ' आदि की रचना की । इसी परंपरा में हरेकृष्ण जौहर ने 'मयंक मोहिनी या मायामहल', 'कमलकुमारी', 'निराला नकाबपोश', 'भयानक खून', किशोरीलाल गोस्वामी ने 'तिलस्मी शीशमहल' और रामलाल वर्मा ने 'पुतली महल' आदि की रचनाएँ कीं । जासूसी उपन्यासों में गोपालराम गहमरी के 'सरकटी लाश', 'चक्करदार चोरी', 'जासूस की भूल', 'जासूस पर जासूसी', 'जासूस चक्कर में', 'इन्द्रजालिक जासूस', 'गुप्त भेद', 'जासूस की ऐयारी', 'गोविन्दराम' आदि

1. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित डॉ. संतोष खन्ना का का लेख 'संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवादक' पृ.46

उल्लेखनीय उपन्यास हैं । अद्भूत घटना प्रधान उपन्यासों के क्रम में 'लंदन रहस्य', विट्ठलदास नागर कृत 'किस्मत का खेल', बाँकेलाल चतुर्वेदी कृत 'खौफ़नाक खून', दुर्गाप्रसाद खत्री कृत 'अद्भुत भूत' आदि प्रमुख हैं । ऐतिहासिक उपन्यासों के रूप में किशोरीलाल गोस्वामी का 'तारा वा क्षात्रकुलकमलिनी', 'सुलताना रज़िया बेगम वा रंगमहल में हलाहल', गंगाप्रसाद गुप्त कृत 'नूरजहाँ', 'कुमारसिंह सेनापति', जयरामदास गुप्त का 'काश्मीर पतन' आदि उल्लेखनीय हैं । सामाजिक उपन्यास के रूप में लज्जाराम शर्मा कृत 'आदर्श दम्पति', किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'पुनर्जन्म का सौतिया डाह', 'अंगूठी का नगीना' आदि ख्याति प्राप्त हैं ।[1]

द्विवेदी काल में कविता तथा नाटकों के अनुवादों के साथ-साथ उपन्यासों के अनुवाद भी हुए । इस काल में बंगला भाषा तथा अंग्रेजी भाषा के उपन्यासों का हिन्दी अनुवाद अधिक हुआ है । ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने दामोदर मुखोपाध्याय के, किशोरीलाल गोस्वामी ने बंकिमचन्द्र के, गोपालराम गहमरी ने पंचकौड़ी दे के, जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा रमेशचन्द्र दत्त के कई उपन्यासों का बंगला से हिन्दी में अनुवाद किया । रेनॉल्ड्स के 'मिस्ट्रीज़ ऑफ दि कोर्ट ऑफ लन्दन' का हिन्दी अनुवाद 'लन्दन रहस्य' नाम से किया गया । आर्थ कानन डायल के 'ए स्टडी इन स्कॉरलेट' का गोपालराम गहमरी ने 'गोविन्दराम' नाम से, गंगाप्रसाद गुप्त ने रेनॉल्ड्स के 'लब्ज़ ऑफ दि हेयर' का 'रंगमहल' नाम से, जनार्दनप्रसाद 'द्विज' ने डिफ़ो के 'रॉबिन्सन क्रूसो' का इसी नाम से, दुर्गाप्रसाद खत्री ने विक्टर ह्युगो के 'ला मिज़रेबल' का 'अभागे का भाग्य' नाम से महावीरप्रसाद पोद्दार ने स्टो के 'अंकल टॉम्स केबिन' का 'टाम काका की कुटिया' नाम से, लाला चन्द्रलाल ने स्कॉट के 'दि एबट' का 'रान मेरी' नाम से अनुवाद किया । कुछ अपवादों को छोड़कर प्रायः सभी अनुवाद रोमांचकारी, रहस्यवादी और कौतुक प्रधान उपन्यासों के ही हुए हैं । अंग्रेजी के गंभीर समस्या प्रधान उपन्यासों के अनुवाद इस काल में नहीं हुए ।[2]

इस प्रकार द्विवेदीकाल में तत्कालीन लोक रुचि रोमांचकारी, तिलस्मी-ऐयारी, रहस्यवादी भावप्रधानता वाले उपन्यासों के प्रति अधिक होने से इन्हीं

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.512
2. वही, पृ.513

प्रकार के उपन्यासों के हिन्दी में अनुवाद हुए । उपन्यास विधा को अनुवाद के माध्यम से जासूसी, रहस्यवादी आदि कथा का विचार मिलने से इन्हीं प्रकार के मौलिक उपन्यास भी अनेक लिखे गए । इस प्रकार के नए उपन्यासों की रचना में अनुवाद का अप्रत्यक्ष महत्त्व विशेष रहा है ।

5.2.3 द्विवेदीकालीन कहानी और अनुवाद :

हिन्दी साहित्य में कहानी विधा का जन्म बहुत देर से हुआ था । कहानी का जन्म हिन्दी साहित्य में द्विवेदी काल में ही हुआ था ।[1] शुरूआत में कहानियाँ संस्कृत के नाटकों का आधार लेकर, कुछ कहानियाँ शेक्सपियर के नाटकों से भाव लेकर, कुछ कहानियाँ बंगला भाषा में रचित कहानियों से रूपान्तरित होकर, कुछ लोककथाओं से प्रेरित होकर जन्मीं । किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' कहानी शेक्सपियर के नाटक 'टेम्पेस्ट' के आधार पर लिखी गई है । इस काल में अधिकतर कहानियाँ बंगला भाषा से अनूदित हुई तथा उनमें गिरिजाकुमार घोष (पार्वतीनन्दन) और बंगमहिला के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं ।[2]

इस युग में नाटक, उपन्यास, कहानी के तो अनुवाद हुए ही साथ-साथ आलोचना विधा के अनुवाद भी हुए । हालाँकि इस युग में हिन्दी-आलोचना का तात्त्विक रूप तो नहीं निखरा परन्तु संस्कृत-आचार्यों की पद्धति पर लक्षण ग्रंथ प्रस्तुत करने की परंपरा कायम रही थी, साथ ही तुलनात्मक मूल्यांकन, अनुसंधानपरक आलोचना, परिचयात्मक आलोचना, शास्त्रीय आलोचना, व्याख्यात्मक आलोचना आदि आलोचना के रूप भी विकसित हुए थे । जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने 'समालोचनादर्श' नाम से भारतेन्दु काल में (1897) पोप के 'एस्से ऑन क्रिटिसिज़्म' का पद्यात्मक अनुवाद प्रस्तुत किया था । सन् 1905 में आचार्य शुक्ल ने एडिसन के 'एस्से ऑन इमेजिनेशन' का 'कल्पना का आनन्द' नाम से अनुवाद किया । महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने काव्य सिद्धान्त प्रतिपादक कुछ निबन्धों में कई अंग्रेज लेखकों का आधार लिया है ।[3]

इस प्रकार द्विवेदी काल में कहानियों का बहुत ही कम अनुवाद हुआ है साथ ही आलोचनात्मक साहित्य का भी अनुवाद अपेक्षाकृत कम रहा है ।

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.514
2. वही, पृ.515
3. वही, पृ.518

5.3 श्रीधर पाठक : एक अनुवादक :

पंडित श्रीधर पाठक का जन्म आगरा जिले के जोन्धरी गाँव में हुआ था । हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं के मर्मज्ञ विद्वान श्रीधर पाठक ब्रजभाषा और खड़ी बोली के समान अधिकारी थे । इनकी ब्रजभाषा जैसी चलती और रसीली, वैसा ही कोमल और मधुर संस्कृत पदविन्यास भी है । इनकी कृतियों में 'जगत सचाईसार', 'काश्मीर कुसुम', 'भक्तिविभा', 'देहरादून', 'भारतगीत' आदि उल्लेखनीय हैं । इन्होंने कालिदास कृत 'ऋतुसंहार' तथा गोल्डस्मिथ की रचनाओं का हिन्दी काव्यानुवाद किया है ।[1] इन्होंने कालिदास कृत 'ऋतुसंहार' और गोल्डस्मिथ कृत 'हरमिट', 'डेज़र्टेड विलेज', 'दि ट्रैवेलर' का अनुवाद 'ऋतुसंहार', 'एकान्तवासीयोगी',. 'ऊजड़ ग्राम' और 'श्रांत पथिक' शीर्षक से बहुत पहले ही कर दिया था ।[2]

श्रीधर पाठक ने गोल्डस्मिथ की 'The Hermit' रचना का अनुवाद किया है । इस अनुवाद में जहाँ मूल में पद्य है वहाँ अनुवाद में भी पद्य को ही रखा है । साथ ही अनुवाद में जहाँ श्रीधर पाठक ने अपनी ओर से जो कुछ जोड़ा वह अधिक रसीला और माधुर्यपूर्ण हो गया है । श्रीधर पाठक के अनुवाद पर प्रकाश डालते हुए उदाहरणों के साथ डॉ. आरिफ़ नगीर ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया जिसमें से कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं :[3]

मूल -

And when beside me in the dale,
His carold lays of love
This breath lent fragrances to the gale,
And music to the grove.

- The work of Goldsmith, Vol.1,
Edvin And Angelina, 90 page 30 The
Deserted village

श्रीधर पाठक -

जब वह मेरे साथ टहलने शैलतरी में जाता था ।

---

1. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित डॉ. आरिफ़ नज़ीर का का लेख 'श्रीधर पाठक' पृ.168
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.496
3. वही, पृ.167-173

अपनी अमृतमयी वाणी से प्रेमसुधा बरसाता था ।
उसके स्तर से हो जाता था वनस्थली कस ठाम ।
सौरभ-मिलित सुरस-ख पूरित सुस्कानन सुखधाम ।

'दि डिज़र्टेड विलेज' रचना में ऑवर्न नामक गाँव के उजड़ेपन का चित्रण है, विद्वान मानते हैं कि गोल्डस्मिथ का बचपन इसी गाँव में व्यतीत हुआ था । मूल काव्य में 430 पंक्तियाँ हैं जबकि श्रीधर पाठक ने अनुवाद में 514 पंक्तियाँ प्रयुक्त की हैं । प्रथम 490 पंक्तियों में गाँव के उजड़ेपन का कारुणिक वर्णन है । शेष पंक्तियों में कविता की वंदना की गई है । 'दि डिज़र्टेड विलेज' के प्रारंभ में ऑवर्न गाँव के प्राचीन दिनों का वर्णन हैं । उस समय गाँव में सुख था जहाँ कवि ने अपना बचपन बिताया था -

मूल -

Sweet Auburn ! loveliest village of the plain,
Where health and plenty cheer'd the labouring swain
Where smiling spring its earliest visit paid
And parting summer's lingering blooms delayed

श्रीधर पाठक ने इसका वाक्य प्रति वाक्य पद्यानुवाद किया है -

हे प्यारे औबर्न सकल गामन सौं रूरे ।
जहाँ श्रमी कृषिकार बसें सुख सम्पत्ति पूरे ।
जहाँ रसीली ऋतु बसन्त पहले ही आवत ।
जान समय विलमाय फूल फल देर लगागत ।

श्रीधर पाठक की अनुवाद कला के संदर्भ में उपरोक्त उदाहरण पर्याप्त हैं ।

5.4 मैथिलीशरण गुप्त : एक अनुवादक :

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झाँसी के चिरगाँव में हुआ था । द्विवेदी काल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी कृति 'भारत-भारती' की रचना करके राष्ट्र कवि के रूप में सम्मानित हुए । इन्होंने दो महाकाव्यों तथा बीस खंडकाव्यों की रचना की है, साथ ही इन्होंने तीन नाटक, सभी प्रकार के प्रगीत, मुक्तक आदि भी लिखे हैं । इन्होंने अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत से सात ग्रंथों का अनुवाद भी किया है ।[1]

---

1. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित लेख 'मैथिलीशरण गुप्त' डॉ. उमाकांत गोपाल पृ.174

इनकी सभी रचनाएँ प्राय: राष्ट्रीयता से ओतप्रोत हैं । 'जयद्रथ वध', 'भारत-भारती', 'पंचवटी', 'झंकार', 'साकेत', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'जयभारत', 'विष्णुप्रिया' आदि उल्लेखनीय काव्यग्रंथ हैं । इनके द्वारा अनूदित काव्य - 'प्लासी का युद्ध', 'मेघनाद-वध', 'वृत्र-संहार' आदि हैं ।[1]

मैथिलीशरण गुप्त ने उमर खय्याम की फ़ारसी में लिखित एवं फिट्जेराल्ड द्वारा अंग्रेजी में अनूदित रुबाइयों का हिन्दी में अनुवाद किया । फ़ारसी और अंग्रेजी न जानते हुए भी मैथिलीशरण गुप्त ने यह अनुवाद किया है । गुप्त के परम मित्र रायकृष्णदास का आग्रह था कि ये उमर खय्याम की विश्व प्रसिद्ध रुबाइयों का हिन्दी काव्यानुवाद करें । अंग्रेजी न जाननेवाले मैथिलीशरण गुप्त के लिए फिट्जेराल्ड लिखित रुबाइयों की व्याख्या स्वयं रायकृष्णदास ने की और गुप्त ने उन्हें छन्दबद्ध किया । डॉ. उमाकान्त गोयल ने अपने एक अध्ययन में उमर खय्याम की रुबाइयों का फिट्जेराल्ड द्वारा किए गए अंग्रेजी अनुवाद को प्रमाण मानकर गुप्त की रुबाइयात उमर खय्याम की समीक्षा की है जिसमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :[2]

मूल -

With them the seed of wisdom did I sow,
And with my own hand labour'd it to grow,
And this was all the Harvest that I reep'd -
I came like water, and like wind I go.

अनुवाद -

उनकी संगति में रह मैंने ज्ञान बीज बोया भरपूर,
उसे बढ़ाने की चेष्टा में बन रहा मैं चिर दिन चूर,
उससे जो फल पाया मैंने वह था केवल एक यही -
'आया नीर समान और मैं जाता हूँ समीर-सा दूर' ।

मूल -

Now the New Year riviving old Desires,
The Thoughtful soul to Solitude retires.

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.500
2. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित डॉ. उमाकांत गोपाल का 'मैथिलीशरण गुप्त' पृ. 176 से.178

अनुवाद -

हुआ पुरानी इच्छाओं का नए वर्ष के संग विकास,
चिन्ताशील जीव निर्जन को चला वहाँ करने को वास ।

मूल -

Awake ! For Morning in the Bowl of night
Has flung the stone that puts the stars to Flight
And Lo ! the Hunter of the East Has Caught
The Sultan's turret in a Noose of Light.

अनुवाद -

उठो उषा ने रात्रि-पात्र में अरूण उपल निक्षेप किया,
ऋक्ष-पक्षियों को जिसने है नभ क्षेत्र से उड़ा दिया ।
और पूर्व के जालिक रडि ने वह ऊँचा शाही मीनार,
देखो, कोटि-कोटि किरणों के फंदे में है फाँस लिया ।

विश्व प्रसिद्ध कवि उमर खय्याम की रूबाइयों के अनुवाद विश्व की अनेक प्रतिष्ठित भाषाओं में एकाधिक बार हो चुके थे । मैथिलीशरण गुप्त को हिन्दी में इसकी कमी दिखाई दी और उन्होंने इन विश्व प्रसिद्ध रुबाइयों का हिन्दी में अनुवाद करने की ओर रूचि दिखाई । इस प्रकार हिन्दी साहित्य को भी विश्व प्रसिद्ध रुबाइयाँ प्राप्त हो सकीं । उमर खय्याम की रुबाइयों के अलावा मैथिलीशरण गुप्त ने संस्कृत और बंगला भाषा की पाँच प्रसिद्ध कृतियों के भी हिन्दी अनुवाद करके हिन्दी को और अधिक समृद्धि प्रदान की ।

5.5 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : एक अनुवादक :

सूर्यकान्त त्रिपाठी का जन्म 1897 में हुआ था । हिन्दी जगत में ये 'निराला' नाम से सुप्रसिद्ध हैं । इनका जीवन संघर्षपूर्ण रहा । अनेक अभावों और विपत्तियों में भी इन्होंने हिम्मत नहीं हारी । इनकी रचनाओं में एक ओर विद्रोह का स्वर मुखर है तो दूसरी ओर मानवीय नियति और विवशताओं की करूण रागिनी सुनाई देती है । इनकी रचनाएँ अधिकांशतः विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित हैं । साथ ही इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के अतीत गौरव के प्रति श्रद्धा, सांस्कृतिक जागरण, छायावादी प्रवृत्तियों की स्पष्टता, राष्ट्रीय दृष्टिकोण, अद्वैत दर्शन की गहरी छाप दिखाई देती है । 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका' आदि उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं । इसके

अलावा 'तुलसीदास', 'राम की शक्ति पूजा', 'सरोज स्मृति', 'बेला', 'नए पत्ते' आदि भी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं ।[1]

महाप्राण 'निराला' कवि, कथाकार और विचारक के साथ-साथ कुशल अनुवादक भी थे । उन्होंने संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी के साथ-साथ ब्रजभाषा तथा अवधी की सुप्रसिद्ध रचनाओं का सफल अनुवाद किया है । संस्कृत से 'वात्स्यायन कामसूत्र', अंग्रेजी से 'परिव्राजक', बंगला से बंकिम कृत उपन्यास - 'आनन्दमठ', 'कपालकुंडला', 'चन्द्रशेखर', 'दुर्गेशनन्दिनी', 'कृष्णकान्त का बिल', 'युगांगुलीय', 'रजनी देवी', 'चौधरानी', 'राजरानी', 'विषवृक्ष', 'राजसिंह' आदि; टैगोर कृत 'रथयात्रा' (नाटिका), 'गोविन्ददास पदावली', 'राजयोग' आदि; बंगला से ही 'श्री रामकृष्ण वनाचामृत, भाग-चौथा'; अंग्रेजी से 'भारत में विवेकानन्द' आदि उल्लेखनीय अनुवाद हैं । इसके अलावा 'तटपर' (रवीन्द्र-विजयनी), 'ज्येष्ठ' (रवीन्द्रनाथ), 'वैशाख', 'क्यों हँसती हो, कहाँ देश है' (रवीन्द्र), 'निरूद्देश्य यात्रा', 'प्रिय से', 'जीवन देवता', 'क्षमा प्रार्थना' आदि उल्लेखनीय रूपान्तर हैं ।[2]

अपने अनुवाद में 'निराला' ने कथोपकथनों के रूपान्तरण में, संवादों में, शब्दचयन आदि में बड़ी सतर्कता बर्ती है । उन्होंने पद्यानुवाद भी बड़ी कुशलतापूर्वक किया है । उन्होंने तुलसी कृत रामायण (विनयखंड, बालकांड) का अवधी से खड़ी बोली में पद्यान्तर किया है । उन्होंने इस अनुवाद के माध्यम से खड़ी बोली में दोहा, चौपाई आदि का भी प्रचलन किया है । जैसे -

मूल -
रुद्रहिं देखि मदन भय माना ।
दुराधरष दुरगम भगवाना ।।
अनुवाद -
हर को लखकर मदन गया डर ।
दुराद्धर्ष दुर्गम विश्वेश्वर ।।

उपरोक्त अनुवाद कार्य को आधार मानकर कहा जा सकता है कि बंगला, संस्कृत, ब्रज, अवधी आदि भाषाओं में निराला की समाधिकारिता थी । 'निराला'

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. रामनिवास गुप्त, पृ.400
2. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित का 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' पृ. 180

की आनन्दमठ युगांगुलीय, वात्स्यायन कामसूत्र, परिव्राजक, भारत में विवेकानन्द आदि प्रसिद्ध अनूदित कृतियों से हिन्दी भाषा को विकास पथ मिला ।

5.6 हरिवंशराय 'बच्चन' : एक अनुवादक :

हरिवंशराय 'बच्चन' का जन्म 1907 में हुआ था । इनका आरंभिक जीवन कष्टों और अभावों में बीता था । ये उमर खय्याम की रुबाइयों से काफी प्रभावित थे । इनके काव्य संग्रह - 'मधुशाला', 'मधुबाला' और 'मधुकलश' उमर खय्याम की रुबाइयों से प्रभावित हैं । इन रचनाओं के अलावा 'निशा-निमन्त्रण', 'एकान्त संगीत', 'आकुल अन्तर', 'सतरंगिनी', 'बंगाल का अकाल', 'प्रणय पत्रिका', 'बुद्ध और नाचघर', 'चार खेमे चौंसठ खूँटे', 'हलाहल', 'खादी के फूल', 'मिलन यामिनी', 'त्रिभंगिमा', 'दो चट्टानें' आदि उल्लेखनीय हैं ।[1]

डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन' एक अत्यंत कुशल अनुवादक हैं । उन्होंने संस्कृत से भगवत गीता का अवधी भाषा में अनुवाद जनगीता नाम से किया, खैयाम की रुबाइयों, शेक्सपियर के नाटकों - मैकबेथ और ओथेलो, चौंसठ रूसी कविताओं, माइकल ब्रेचर कृत नेहरू की जीवनी - नेहरू : राजनीतिक जीवन चरित्र, आदि का हिन्दी में अनुवाद किया । इसके साथ-साथ वे भारत के विदेश मंत्रालय में प्रमुख हिन्दी अधिकारी के रूप में भी कार्यरत थे । विदेश मंत्रालय में उन्होंने प्रचुर मात्रा में अनुवाद कार्य किया ।[2] श्री विश्वनाथ मिश्र ने अपने एक अध्ययन में 'बच्चन' के अनुवाद कार्य पर विस्तार से चर्चा की है जिसमें से अनुवाद के कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं ।[3]

अंग्रेज अनुवादक फिट्ज़ेराल्ड़ द्वारा की गई अनूदित रचना का हरिवंशराय 'बच्चन' ने श्रेष्ठ अनुवाद किया है -

मूल -

How sweet is mortal sovranty ! think some
Others - "How blest the paradise to come"
Ah ! take the cash in hand and waive the rest,
Oh ! the brave Music of distant Drum.

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. रामनिवास गुप्त, पृ.413
2. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित विश्वनाथ मिश्र का लेख 'डॉ. हरिवंशराय बच्चन' पृ. 193
3. वही, पृ. 187

अनुवाद -

सुना मैंने कहते कुछ लोग मधुर जग पर मानव का राज
और कुछ कहते जग से दूर स्वर्ग में ही सब सुख का साज
दूर का छोड़ प्रलोभन मोह करो जो पास उसी का मोल
सुहाने भर लगते हैं प्राण, अरे ये दूर-दूर के ढोल ।

मूल (मैकबेथ) -

As thou art in desire ? wouldst thou have that
And live a coward in thin own esteem;
Letting I dare not wait upon I would,
Like the poor cat I' the adage ?

अनुवाद -

क्या तुम वह लेना चाहोगे जिसे समझते
हो तुम शीश-मुकुट जीवन का, औ' अपनी नज़रों
में कायर बने रहोगे, 'कर न सकूँगा'
'करना चाहूँगा' की माला जपा करोगे
बिल्ली मछली खाएगी, पर पाँव न भीगें ।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता -

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवं जन्म मृतस्य च
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि

अनुवाद (जनगीता) -

अवस मरई जो जनमई ताता, मरई सो जनमइ जानहि ग्याता ।
अटल मरन-जीवन कर साथा, कस तब सोचु करसि धुन माथा ।।

इस प्रकार डॉ. हरिवंशराय बच्चन ने अनुवाद के माध्यम से हिन्दी साहित्य में उमर खैयाम की रूबाइयों को मूलत: स्थापित कर तथा अंग्रेजी के उत्कृष्ट साहित्य का भी हिन्दी में रूपान्तरण किया जिससे हिन्दी साहित्य को विकास का एक और नया मार्ग मिला ।

5.7 रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक अनुवादक :

रामधारीसिंह दिनकर का जन्म ई. 1908 में मुंगेर जिला के सिमरिया गाँव में हुआ था । ये क्रमश: एक हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक, बिहार सरकार के अधीन सब-रजिस्ट्रार, राज्य सभा के सदस्य, भागलपुर विश्व विद्यालय के

उपकुलपति और भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे थे ।[1] इनके द्वारा रचित 'रेणुका' काव्यसंग्रह 1935 में प्रकाशित हुआ था । इसके अलावा 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'द्वंद्व गीत', 'कुरुक्षेत्र', 'सामधेनी', 'धूपछाँह', 'बापू', 'इतिहास के आँसू', 'धूँप और धुआँ', 'रश्मिरथी', 'नीलकुसुम', 'नीम के पत्ते', 'तितली', 'सीपी और शंख', 'रेती के फूल', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा' आदि उनकी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं । इनकी रचनाएँ प्रगतिशील, मानवीय और सांस्कृतिक हैं ।[2]

'सीपी और शंख', 'आत्मा की आँखें' आदि दिनकर की प्रमुख अनूदित कृतियाँ हैं । उनकी अन्य कृतियों जैसे 'धूपछाँह', 'सामधेनी', 'कोयला और कवित्व', 'मृति तिलक', 'चेतना की शिखा' में उनके द्वारा अनूदित कविताएँ भी मिलती हैं ।[3] उन्होंने 'सीपी और शंख' में मूल कवि के केवल नाम का उल्लेख किया है और मूल कविता की प्रारंभिक पंक्ति या शीर्षक का उल्लेख नहीं किया है । इसी तरह 'आत्मा की आँखें' में केवल मूल कवि का उल्लेख किया है । डी.एच.लॉरेन्स की 75 कविताओं का उन्होंने अनुवाद किया है । 'सीपी और शंख' में पुर्तगाली भाषा के कवि अलवर्तो द लकर्दा की छह कविताओं, स्पैनिश भाषा के कवि फेडेरिको गार्सिया लोर्का की दो कविताओं, जर्मन भाषा के आर.एम.रिल्के की दो, फ्रेडरिक विल्हेम नीत्से की एक, जॉहन क्रिश्चियन फ्रेडरिक होल्डरलीम की तीन, जूलियस रोडन बर्ग की एक, हेनरिक हाइने की दो कविताओं, अंग्रेजी के केनेथ पशेन की एक, एजस पाउण्ड की दो कविताओं, फ्रेंच भाषा के कवि चार्ल्स क्रोज़ की एक कविता, रूसी भाषा के कवि निकोलाइ गुमिलेव की एक कविता, पोलिश भाषा के कवि अदम मित्सकेविच की एक कविता, चीनी भाषा के कवि हो चिह फांग की एक, आइ चिंग की दो, फेंग चिह की दो, सेंग को चिया की एक, वेन इन तुओ की एक कविता, अंग्रेजी के डी.एच.लॉरेन्स की पाँच, बॉल्टर सैवेज लैंडर की एक कविता, मलयालम भाषा के जी.सी.कुरुप की एक कविता का अनुवाद

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृ.621
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा, डॉ. रामनिवास गुप्त, पृ.410
3. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित देवेशचन्द्र का लेख 'रामधारीसिंह 'दिनकर' पृ. 197

प्रस्तुत किया है ।[1] 'धूपछाँह' नामक अपनी रचना की भूमिका में रामधारीसिंह दिनकर लिखते हैं - 'धूपछाँह', 'कोयला और कवित्व' और 'मृत्ति तिलक' में मौलिक कविताओं के साथ अनूदित कविताएँ भी संकलित हैं । 'धूपछाँह' में रवि बाबू की कविताएँ - 'दो बिघा जमीन' और 'पुरातन नृत्य'; सरोजिनी नायडू की कविताएँ - 'तन्तुवाय' और 'तीन दर्द'; पाश्चात्य कवि गाड्फे की 'नींद' कविता के शीर्षक से अनुवाद किया है । 'बच्चे का तकिया' और 'वरभिक्षा' सत्येन्द्र नाथ दत्त की बंगला कविताओं से ली गई हैं परन्तु इनके मूल कवि क्रमशः मार्सेलिन वाल्मोर और नगूची हैं । 'पानी की चाल' कविता रॉबर्ट सदी और अकबर इलाहाबादी के अनुकरण पर लिखी गई है ।[2] 'कवि का मित्र' नामक कृति पद्मसिंह शर्मा द्वारा अनूदित लेख (मुझे मेरे मित्रों से बचाओ) तथा अंग्रेजी कवियों से प्रेरित है । रोशन बे की बहादुरी का प्लॉट लॉन्गफैलो की एक कविता से लिया गया है - इस बात का स्वीकार रामधारीसिंह दिनकर अपनी रचना 'धूप-छाँह' की भूमिका में करते हैं । देवेशचन्द्र को संशय है कि 'कोयला और कवित्त्व' की कविताएँ अनूदित ही हैं। देवेशचन्द्र का मानना है कि 'ओ नदी', 'नदी और पीपल', 'धन्यवाद, मैं सचमुच नहीं मरूँगा' आदि कविताएँ अनूदित किंवा प्रेरित रचनाएँ लगती हैं । इस संग्रह की पहली कविता 'पुरानी और नई कविताएँ' एजरा पाउण्ड की 'नो हिज़ फर्स्ट वर्क वॉज़ दि बेस्ट' से प्रेरित बताई गई है । यदि अन्य कविताओं का भी मूल स्पष्ट कर दिया जाता तब भ्रांति नहीं होती ।"[3] 'मृत्ति तिलक' में 'मेरी विदाई' कविता का मूल कवि स्पैनिश भाषा के कवि डॉक्टर जोज रिज्जल फिलीपिन, 'राजकुमारी और बाँसुरी' कविता के मूल कवि नॉर्वेजियन कवि जॉनसन; 'प्लेग' कविता के मूल कवि यूनानी कवि मैथ्यू प्रायर को बताया गया है । इसी संग्रह में मलयालम के श्री वेणिकुलम् गोपाल और गुजराती के श्री बालकृष्ण दवे की किसी कविता पर आधारित 'सर्ग संदेश' और 'बरगद' नामक कविताएँ संकलित हैं । 'गोपाल का चुम्बन' बंगला कवि सत्येन्द्रनाथ दत्त और उनकी कविता अंग्रेजी के कवि टेनिसन पर आधारित बताई गई है ।[4]

1. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित देवेशचन्द्र का लेख 'रामधारीसिंह 'दिनकर' पृ. 198
2. धूपछाँह, रामधारीसिंह दिनकर, पृ.
3. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित देवेशचन्द्र का लेख 'रामधारीसिंह 'दिनकर' पृ. 199
4. वही

रामधारीसिंह दिनकर संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी भाषा के जानकार थे। उन्होंने इन भाषाओं के अलावा अन्य भाषाओं से जो अनुवाद किए वे सारे अंग्रेजी के माध्यम से ही किए। 'चेतना की शिक्षा' कृति में श्री अरविन्द के दर्शन पर नौ लेखों के अतिरिक्त श्री अरविन्द की चौदह कविताओं का हिन्दी में अनुवाद प्रकाशित किया गया है। इसके अलावा 'शुद्ध कविता की खोज' दिनकर की एक महत्त्वपूर्ण कृति है जिसमें उन्होंने अनेक काव्यांशों के अनुवाद हिन्दी में किए हैं। इस कृति के अन्त में 'कोयला और कविता' शीर्षक कविता से कला पर पद्यात्मक निबंध तथा एजरा पाउण्ड की 'नो, हिज़ फ़र्स्ट वर्क वोज़ दि बेस्ट' और चार्ल्स बोदलेयर की एक-एक कविता का अनुवाद दिया है।[1]

इस प्रकार रामधारीसिंह दिनकर ने प्रचुर मात्रा में अनुवाद किया जिससे हिन्दी साहित्य में नए-नए तथ्य प्रकाश में आए और भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण कड़ियों का आविर्भाव हुआ।

5.8 राजेन्द्र यादव : एक अनुवादक :

उत्तरप्रदेश के आगरा जिला में 28 अगस्त 1929 को राजेन्द्र यादव का जन्म हुआ था। इन्होंने कथा-कहानियों के माध्यम से हिन्दी साहित्य में नए आयामों की स्थापना की। 'आकाश', 'उखड़े हुए लोग', 'शह और मात', 'एक इंच मुस्कान', 'भंडारी के साथ अनदेखे अनजाने पल', 'मंत्र विद्ध', 'कुलटा' आदि उपन्यास, 'देवताओं की मूर्तियाँ', 'खेल खिलौने', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'छोटे-छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक', 'चौखटे तोड़ते त्रिकोण' आदि कहानियों के कर्ता राजेन्द्र यादव ने अनुवाद के माध्यम से हिन्दी साहित्य को रूसी संस्कृति के दर्शन कराए। उन्होंने अलबेयर कामू के उपन्यास का अनुवाद - 'एक मछुआ एक मोती', तुर्गनेव के उपन्यास का अनुवाद - 'प्रथम प्रेम वसन्त लावन', चेखव के उपन्यास का अनुवाद - 'टक्कर' शीर्षक से किया। साथ ही चेखव के नाटकों के अनुवाद - 'चेरी का बगीचा', 'तीन बहनें', 'हंसनी' आदि नाम से किया।[2]

---

1. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित देवेशचन्द्र का लेख 'रामधारीसिंह 'दिनकर' पृ. 200
2. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित सीमासिंह का लेख 'राजेन्द्र यादव' पृ. 229

5.9 मोहन राकेश : एक अनुवादक :

मोहन राकेश एक समर्थ नाटककार तथा अनुभूति-प्रवण कथाकार थे । साहित्यक्षेत्र का कोई भी कोना ऐसा नहीं था जो मोहन राकेश की दृष्टि से अनछुआ रह गया हो । उन्होंने उत्तम अनुवाद भी प्रस्तुत किए ।

मोहन राकेश ने क्लैरेन्स डे कृत 'लाइफ़ विद फादर' का 'जो कहें पापा जो करें पापा', एविता मोरिस कृत 'फ्लावर्स ऑफ़ हिरोशिमा' का 'हिरोशिमा के फूल', ग्राहम ग्रीन कृत 'दि एण्ड ऑफ दि अफेयर' का 'उस रात के बाद', हेनरी जेम्स कृत 'दि पार्ट्रेट ऑफ ए लेडी' का 'एक औरत का चेहरा' आदि का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया । अंग्रेजी उपन्यासों के अलावा उन्होंने संस्कृत नाटकों - 'शाकुन्तलम्' और 'मृच्छकटिक' का भी अनुवाद किया है ।[1]

इस प्रकार मोहन राकेश ने अंग्रेजी और संस्कृत की उत्तम कृतियों को हिन्दी में अनूदित करके हिन्दी के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

5.10 डॉ. रघुवीर : एक अनुवादक :

डॉ. रघुवीर मूलतः कोशकार थे । कोशकार का कार्य अनुवाद ही होता है । डॉ. रघुवीर में परम्परात्मक तथा आधुनिक दोनों प्रकार की उच्च शिक्षा का अद्भुत सम्मिश्रण था । वे प्रकृति-प्रदत्त वैयाकरण थे जिन्होंने संस्कृत की अधिकांश विधाओं का अध्ययन किया था । उन्होंने पारिभाषिक शब्दावली के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया । प्रशासन, तकनीकी और विज्ञान से संबंधित विशेष प्रकार के पारिभाषिक शब्द भी डॉ. रघुवीर ने बनाए । डॉ. रघुवीर द्वारा सम्पादित 'बृहत् अंग्रेजी-हिन्दी शब्द कोश' आज भी अत्युपयोगी शब्द कोश है। शब्द व्युत्पत्ति के जितने रूप डॉ. रघुवीर के कोश में देखने मिलते है उतने आर्य या द्रविड़ परिवार की किसी भी भाषा के कोश में नहीं मिलते ।[2]

हिन्दी के लगभग सभी प्रयोजनमूलक क्षेत्रों के लिए डॉ. रघुवीर ने अनेक पारिभाषिक शब्दों की रचना की और ज्ञान के अनेक क्षेत्रों के लिए पारिभाषिक शब्द कोशों का निर्माण किया । डॉ. रघुवीर के इस कार्य से हिन्दी के विकास को एक तेज गति प्राप्त हुई और ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का विकास हिन्दी भाषा में भी हुआ ।

---

1. अनुवाद, अंक 26-28, जुलाई-मार्च 2002 में प्रकाशित डॉ. नीलम फ़ारूकी का लेख 'मोहन राकेश का अनूदित साहित्य' पृ. 35-39
2. अनुवाद, अंक 96-97, जुलाई-दिसंबर 1998 में प्रकाशित डॉ. एम.ए. करन्दीक के मूल लेख का डॉ. श्यामसिंह शशि द्वारा अनुवाद - 'डॉ. रघुवीर' पृ.203-209

इस प्रकार हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में प्रचुर मात्रा में अनुवाद कार्य हुआ । उपरोक्त विवेचन के अनुसार कह सकते हैं कि आधुनिक काल के भारतेन्दु युग से ही अनुवाद प्रवृत्ति ने अपनी दिशा में तीव्रता से गति की । बड़े-बड़े प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने बंगला, अंग्रेजी, संस्कृत आदि अन्य अनेक भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद किए । विश्वप्रसिद्ध रचनाओं का अनुवाद हिन्दी में होने से वे रचनाएँ हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध होने लगी । मेघदूत, रघुवंश, कुमार संभव, वात्स्यायन कामसूत्र आदि अद्वितीय रचनाएँ हिन्दी भाषा में अनूदित हुई । संस्कृत और अंग्रेजी के विश्वप्रसिद्ध नाटकों का भी अनुवाद हुआ - अभिज्ञानशाकुंतल, मालती-माधव, प्रबोध चन्द्रोदय, मृच्छकटिक, रत्नावली आदि संस्कृत से और वेनिस का व्यापारी, भ्रमजालक, भूल़भुलैया, मनभावन, मैकबेथ आदि जैसे अंग्रेजी नाटकों का हिन्दी में अनुवाद हुआ । बंग विजेता, दुर्गेशनंदिनी, मधुमालती, भानमती, चतुर चंचला आदि जैसे उपन्यासों का अनुवाद क़िया गया । तत्पश्चात द्विवेदी युग में अनुवाद अनुवाद प्रवृति प्रचुर मात्रा में देखने मिलती है । अनेक साहित्यकारों ने अपनी मौलिक रचनाओं की अपेक्षा अनुवाद कार्य की ओर, अधिक रूचि दिखाई थी । अनेक सुविख्यात साहित्यकारों ने अनुवाद के माध्यम से हिन्दी साहित्य के विकास में अपना-अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया - महावीरप्रसाद द्विवेदी, श्री सदानंद अवस्थी, लाला सीताराम, सत्यनारायण, दुर्गाप्रसाद खत्री, ईश्वरीप्रसाद शर्मा, महावीरप्रसाद पोद्दार, गिरिजाकुमार घोष आदि असंख्य साहित्यकारों ने अनुवाद कार्य किया । इनके अलावा श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हरिवंशराय बच्चन, रामधारीसिंह दिनकर, राजेन्द्र यादव, मोहनराकेश, डॉ. रघुवीर के अलावा डॉ. नगेन्द्र ने पूर्व और पश्चिम के महत्त्वपूर्ण काव्यशास्त्रों का हिन्दी में अनुवाद करने-कराने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । आचार्य विश्वेश्वर ने 'अभिनवभारती', ध्वन्यालोक, नाट्यदर्पण, काव्यप्रकाश वक्रोक्ति जीवित आदि का हिन्दी में अनुवाद किया । डॉ. नगेन्द्र की देखरेख में अरस्तु का काव्यशास्त्र, काव्य में उदात्त तत्त्व (लोंगिनुस कृत 'दि सब्लाइम' का अनुवाद), काव्यकला (होरेस कृत आर्स पोयतिका का अनुवाद) आदि प्रकाशित हो चुके हैं । महात्मा गांधी विषयक कृति 'रोमारोला' का 'महात्मा गांधी : विश्व के अद्वितीय पुरूष' नाम से अनुवाद हुआ तो बनारसदास चतुर्वेदी, लालबहादुर शास्त्री, रामनारायण चौधरी और रामनाथ

'सुमन' द्वारा क्रमशः अनूदित कृतियाँ 'प्रिंस क्रोपाटकिन, श्रीमती क्यूरी', 'सरदार वल्लभभाई' और महात्मा काउंटलियो टॉल्सटॉय आदि उल्लेखनीय हैं । आधुनिककाल में अंग्रेजी, मराठी बंगला आदि भाषाओं में लिखे गए यात्रावृत्तों के अनुवाद भी प्रकाशित हुए, जिनमें से काका कालेलकर की 'हिमालय की यात्रा', 'सूर्योदय का देश', कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी की 'बद्रीनाथ की ओर' तथा शंकर कृत 'ए पार बांगला ओ पार बांगला विशेष रूप से उल्लेखनीय है' । प्राचीन भारतीय दर्शन के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद एकाधिक अनुवादकों ने किया । पाश्चात्य दर्शन और पाश्चात्य चिंतकों के ग्रंथ भी हिन्दी भाषा में अनूदित हुए हैं और हो रहे हैं । शास्त्रीय और तकनीकी साहित्य में भी विदेशी भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद हुए हैं. जैसे - के. सी. आटवे कृत 'शिक्षा और समाज' का हिन्दी अनुवाद ब्रजभूषण शर्मा द्वारा, लूसी मेयर कृत 'सामाजिक नृविज्ञान की भूमिका' का डॉ. सच्चिदानन्द द्वारा अनुवाद, डॉ. इरावती कर्वे कृत 'भारत में बन्धुत्त्व संगठन' का राजेन्द्र द्विवेदी द्वारा अनुवाद आदि उल्लेखनीय हैं ।

दर्शनशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, वाणिज्य, इतिहास, राजनीतिविज्ञान, लोकप्रशासन, विधि, पुस्तकालयविज्ञान, अर्थशास्त्र, पत्रकारिता, सैन्यविज्ञान, साहित्य, संगीत, कला, भाषाविज्ञान, शिल्पकला, मुद्रणकला, विज्ञान और तकनीकी विद्या, कंप्यूटर विज्ञान आदि अनेक प्रयोजनमूलक क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ता बढ़ गई है और इन क्षेत्रों में प्रचुरमात्रा में अनुवाद हुआ है और भारी मात्रा में हो रहा है । इससे हिन्दी साहित्य और अधिक समृद्ध हो रहा है । अनुवाद के माध्यम से हिन्दी भाषा ने अपने आपको खूब निखारा है और शब्दभंडार को अधिक समृद्ध किया है । प्रयोजनमूलक क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्दों, विश्व की अनेक भाषाओं के शब्दों, उनकी साहित्यिक विधाओं का हिन्दी में अनुवाद के माध्यम से आगमन होने से आदिकाल की पंगु हिन्दी आज पर्वत को भी लांघ सके ऐसी सशक्त हो चुकी है ।